भगवत् कृपा

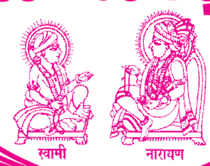

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम् को पाये

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् । विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ॥ शिक्षापत्री, ११६

वर्ष 40 अंक : 2	2.3.2017 गुरुवार (मार्च - अप्रैल)	वार्षिक शुल्क : ₹ 111.00

सुनो काका के मुकुंद की वार्ता, जो है माया के बंधन से उबारता..

अहो ! **13 मार्च – प.पू. गुरुजी का 80 वाँ प्राकट्य दिन,** जो अबकी बार सौहार्द के प्रतीक **'धुलेन्डी'** के दिन होने के कारण अनेक दिव्य गुणों - रंगों से युक्त है। धुलेन्डी का पर्व वैर-वैमनस्य के भावों से ऊपर उठ कर प्रेम का संदेश देता है। पू. मल्कानी अंकल द्वारा संबोधित **'प्यार के गंगासागर' – प.पू. गुरुजी** का एक ही निशान-भावना है कि अखिल 'गुणातीत समाज' के मुक्त दिव्य एकता से जीते हुए, निजी संकुचितता के दायरे छोड़ कर, कुटुंबभावना से भक्ति करके समाज के आद्य सर्जक गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी को जीवंत रखें। इसीलिए 2017 दिसंबर में दिल्ली में मनाए जाने वाले गुरुहरि काकाजी - पप्पाजी की शताब्दी पर्व का सूत्र प.पू. गुरुजी ने यही दिया है – **'गुणातीत समाज की एकता एवं अखंडता हमारा मंत्र है।'**

सच, गुरुहरि काकाजी की प्रत्येक मुद्रा, क्रिया, वार्ता, सूचनों एवं सिद्धांतों को अपने रोम-रोम में बसाए, प.पू. गुरुजी ने अपने संबंध में आते मुक्तों को जीवन का जो सही अर्थ समझाया है या समझा रहे हैं, वह कहीं किसी शास्त्र या अध्यात्म के बड़े-बड़े ग्रंथों द्वारा भी प्राप्त नहीं होगा। और... हम खूब भाग्यशाली हैं कि जैसे प.पू. गुरुजी ने गुरुहरि काकाजी को आत्मसात् किया है, उसी प्रकार प.पू. गुरुजी को अंतर में धार कर जीतीं प.पू. दीदी प्रतिवर्ष अपने प्राकट्य पर्व पर, गुणातीत विभूतियों के माहात्म्य धोध में सभी को सराबोर करके, अध्यात्म मार्ग पर सहजता से चलने की राह दिखाती हैं - ऊर्जा प्रदान करती हैं। आइए, 'भगवत् कृपा' के माध्यम से, **प.पू. दीदी** के प्रार्थना पुष्पों में निहित प.पू. गुरुजी की महिमा से, हमें मिली अनमोल प्राप्ति का मर्म समझें ; इनके दिव्य प्रसंगों का मनन करके, जीव में सत्पुरुष की महत्ता दृढ़ करें...

* **...दिल्ली** मंदिर में अबकी बार शरदपूर्णिमा का उत्सव जब मनाया, तब शाम को सुहृद्स्वामी और संतों ने गुरुजी से प्रार्थना की कि आज आप धोती और गातरिया पहन कर सबको दर्शन दें। हम लोगों ने तो शुरुआत से उन्हें इसी ड्रेस में देखा है। पर, 1997 में जब गुरुजी की बाईपास सर्जरी हुई और उन्हें

इन्फाक की तकलीफ आई, तो धोती पहनने से बहुत घुटन होती थी। पप्पाजी ने लुंगी और कुर्ता पहनने की आज्ञा की और खुद बनवा कर गुरुजी को दिया। सो, संतों की भावना स्वीकारते हुए, बहुत सालों के बाद गुरुजी ने धोती और गातरिया पहना। साथ ही संतों ने आग्रह किया कि आज हम आपकी पाग भी गुणातीतानंदस्वामिजी जैसी बांध देते हैं। पर, गुरुजी ने तो मना ही कर दिया : *नहीं-नहीं, हम लोग वो नहीं हो सकते, तो नहीं बांधनी।* लेकिन, संतों ने खूब प्रार्थना की कि गुरुजी, प्लीज़ थोड़ी देर के लिए ही बांध लीजिए। तब, सिर्फ संतों को खुश करने के लिए गुरुजी ने वैसी पाघ बंधवाई, जबकि उनके फेस से ख्याल भी पड़ता था कि वे बहुत अनइज़ी महसूस कर रहे हैं। पर, गुरुजी के ऐसे रूप का दर्शन करके सब खूब खुश हो गए। गुरुजी ने थोड़ी देर वह पाग पहने रखी और फिर बहाने से उतार दी। बाद में बहनों ने सेवक से गुरुजी को प्रार्थना करवाई कि इस ड्रेस में हमें एक मूर्ति मिल सकती है ? प्रार्थना स्वीकार कर, गुरुजी ने आशीष से कह कर बहनों के लिए मूर्ति बनवा तो दी, पर अपने हाथ से उस पर अंग्रेज़ी में प्रार्थना लिखी –

ओ, स्वामी ! यू हॅव गिवन मी फिज़ीक रिज़ेम्बलिंग यू,
ब्लेस मी टु एटेइन आईडेन्टीफिकेशन विथ यू।

आज हमारे लिए तो गुरुजी काकाजी के स्थान पर हैं। उन्होंने काकाजी को अखंड रखा है। हम सबको वैसी प्रतीति भी होती है। पर, उस मूर्ति में गुरुजी का फेस भी देखें, तो खूब करुणामय चेहरा लगता है कि दिल की सच्चाई से वे प्रार्थना कर रहे हैं कि

हे स्वामी ! आपने मुझे अपने जैसी छबि तो दी है।
लेकिन, आशीर्वाद दें कि आपके साधर्म्य-तद्वद्भाव को पा सकूँ...

ऊंची अवस्था पर होते हुए भी, उन्हें कोई कॉन्सियसनेस नहीं है। कभी हमारे फाधर बन जाते हैं, तो कभी मधर या कभी दोस्त बन जाते हैं। हर प्रकार से हमारे साथ, हमारे लेवल पर ही आ जाते हैं और इसलिए हम उन्हें पहचान नहीं पाते हैं। जब भी ज्योतिबहन को फोन करती हूँ या उनका फोन आता है, तो वे अकसर मुझसे कहती हैं – *तुम्हें तो साक्षात् गुणातीत मिले हैं, उन्हें लूट लेना।*

मंदिर में नए आते कई लोग तो गुणातीतानंदस्वामी की मूर्ति देख कर मिसअन्डरस्टेन्ड भी करते हैं कि गुरुजी ने तो अपनी मूर्ति ही बीच में पधरा रखी है। आज गुरुजी यह प्रार्थना कर रहे हैं, जबकि हम तो उनके सामने कुछ भी नहीं हैं। जिस ढंग से उन्होंने काकाजी से प्रीति की, अपने वर्तन से उन्हें जीवंत रखा है, तो हरेक को ऐसा होता है कि ओहो ! गुरुजी ऐसे हैं, तो काकाजी कैसे होंगे ?

...हम उन्हें जिस नज़रिए से देखें, वे वैसी ही प्रतीति कराएंगे। हमारा नज़रिया ही बदलने की ज़रूरत है। हमारे साथ वे हमारे जैसे हो जाते हैं। हम से चुटकुले सुनते हैं या हंसी-मज़ाक करते हैं, लेकिन वे हमसे ऊंची कक्षा पर हैं।

आज दिनकरभाई भी ख़ास आए हैं। दिनकरभाई का वॅलकम तो हम क्या करें ? आज सुबह तो वे साहेब के पास थे। मैंने वशीभाई से दिनकरभाई को कहलवाया भी कि प्लीज़, यहां आने के लिए आप ऐसी भागदौड़

न करें। लेकिन, एक लालच भी होता ही है कि दिनकरभाई के आशीर्वाद मिल जाएंगे। तो, दिनकरभाई आप इतना परिश्रम करके हमें दर्शन व आशीर्वाद देने के लिए आज आए हैं, उसके लिए धन्यवाद।

अबकी बार हम शिकागो गए, तब दिनकरभाई के बारे में गुरुजी ने कहा था– *दिनकरभाई में से काकाजी के रेडीएशन्स निरन्तर निकलते ही रहते हैं।*

इन्होंने हमारी तरह भगवा नहीं पहना है। लेकिन उनकी जो आध्यात्मिक कक्षा है, काकाजी के साथ जो ऐक्य है, वो शायद हम जान भी नहीं पाएँगे। काकाजी तो ऐसा कहते थे – *अमेरिका में दिनकरभाई जैसे पांच तैयार हो जाएं, तो मैं समझूंगा कि पूरे अमेरिका को सत्संग हो गया।* शिकागो में 12 जून को काकाजी - पप्पाजी का फंक्शन खतम हुआ। 13 जून को हमें शिकागो सिटी देखने जाना था, तो दिनकरभाई हमारे साथ हर जगह पर गए। उसके बाद न्यूजर्सी, न्यूयोर्क, नायग्रा फॉल वगैरह जाने का करीब 12 दिन का हमारा टूर था। लेकिन, दिनकरभाई और वशीभाई हमारे साथ रहे।

दिनकरभाई की ग़ैरहाज़िरी में एक दिन सेवक द्वारा मैंने गुरुजी से कहलवाया – *कमाल की बात है कि 12 जून का फंक्शन अभी तो वाइंडप नहीं हुआ और दिनकरभाई 13 तारीख को हमारे साथ निकल गए। उससे पहले भी तो दिनकरभाई को कोई रेस्ट मिला ही नहीं होगा। अमेरिका में इतना बड़ा फंक्शन उठाना कोई आसान बात नहीं है।* तब, गुरुजी ने बताया कि इस विषय में दो बातें महसूस होती हैं –

एक – *दिनकरभाई अखंड भगवान में रहते हैं, तब वे ऐसा सब वैसे का वैसा छोड़कर आ सकते हैं।*

वाक़ई, हमारे घर पर ही यदि गुरुजी आए हों, तो हम तुरंत वैसे का वैसा छोड़ कर यूँ निकल नहीं सकते। ऊपर से टेन्शन में दिखेंगे– *अरे ! सारा फैला पड़ा है, यह सब कैसे करेंगे ?*

जबकि दिनकरभाई एकदम निर्लेप जैसे। तो, दिनकरभाई अखंड भगवान में रहते हैं, उसका यह साइन है।

दूसरा – *दिनकरभाई को सेवकों का कैसा भरोसा होगा कि गुरुजी पहली बार अमेरिका आए हैं, सो यदि मैं यहां से गुरुजी के साथ चला जाऊंगा, तब भी सेवक पीछे से सब संभाल ही लेंगे।*

शिकागो में मीनाबहन लेउवा की बेटी पिंकी हमें एयरपोर्ट लेने आई थीं। मैंने उनसे पूछा कि यहां कितनी सत्संगी फॅमिलीज़ होंगी ? उन्होंने बताया कि बहुत ज्यादा गिनें, तो एकदम निजी फॅमिलीज़ तो 25 होंगी, जो दिनकरभाई को सच में भगवान का स्वरूप - काकाजी का स्वरूप मानकर जीती हैं।

मैं जब से सत्संग में आई हूँ, गुरुजी को नज़दीक से देखा है। सत्संग की एक-एक फॅमिली के लिए उन्होंने खूब परिश्रम किया है। ऐसे ही शिकागो में दिनकरभाई ने भी आत्मबुद्धि और प्रीति वाला समाज तैयार किया है। इन स्वरूपों का परिश्रम एक सैकण्ड भी भूलने जैसा नहीं है।

* घर - संसार लेकर बैठे हैं, तो प्रॉब्लम्स तो आती ही हैं। तीन - चार साल पहले एक फॅमिली अपनी परेशानी लेकर आई। तो, गुरुजी उनके साथ शाम को 5 बजे से रात के 12.00 बजे तक बैठे रहे। साथ में लेडी भी थी, तो मुझे भी साथ में बैठना ही था। पर, सात घंटे गुरुजी वहीं के वहीं बैठे रहे। मैं सोचती हूँ कि साधु को हमसे क्या स्वार्थ है ? आज हम भी एक जगह पर नहीं बैठ सकते। अभी तीन घंटे से यहाँ बैठे हैं, तो हमें ऐसा लग रहा होगा कि बैठे हुए बहुत समय हो गया। पर, गुरुजी लगातार ऐसा जीकर अपने जीवन से

हमें बता रहे हैं। भजन करते हुए गुरुजी की जीवनशैली के बारे सोचती हूँ, तो ऐसा होता है कि अरे ! सच में गुरुजी को ऐसे भक्तिपूर्ण विचार कहां से आते हैं कि 'स्वामिनारायण मार्ग', 'काकाजी लेन' होनी चाहिए या स्टेशन का नाम 'स्वामिनारायण' होना चाहिए।

* शास्त्रीजी महाराज ने नंदाजी को श्री अक्षरपुरुषोत्तम की जो मूर्ति दी थी, उसके बारे में सभी जानते थे। लेकिन, 1994 में कुरुक्षेत्र से वह मूर्ति गुरुजी ले आए। फिर उन्हें ध्यान आया कि गोपालानंदस्वामी के समय के लालजी (लड्डू गोपाल) मुंबई के भाईखला स्कूल में उनके प्रिंसिपल (श्री जसवंतलाल भट्ट) के पास थे। योगीजी महाराज ने उन लालजी को थाल भी धराया था, यूं वे बापा की प्रसादी के थे। हमारे विजयभाई महेता भावनगर से हैं। उनसे पता लगवाया कि वे प्रिंसिपल साहेब भावनगर में कहाँ रहते हैं। तो, गुरुजी भावनगर गए और उनसे प्रसादी के लालजी देने के लिए कहा।

  प्रिंसिपल साहेब भी बोले – *मैं भी ऐसा ही व्यक्ति ढूंढ रहा था कि जो मेरे लालजी की अच्छी तरह से संभाल कर सके।*

  इस प्रकार गुरुजी भावनगर से लालजी को लेकर आए और 6 महीने के बाद तो वो प्रिंसिपल साहेब का देहांत हो गया।

* ऐसे ही काकाजी ने जब स्थूल शरीर छोड़ा, तो उनके पार्थिव शरीर को विद्यानगर ले जाने के समय गाड़ी खराब हो जाने के कारण दो गाड़ियाँ बदलनी पड़ीं। आख़िर में मुंबई-डोम्बीवली के मनसुखभाई की जीप में काकाजी को विद्यानगर लाया गया। इतने सालों तक गुरुजी को प्रसादी की वो जीप ध्यान में थी। तो फिलहाल हरिद्वार रहते मनसुखभाई के यहां गए और प्रसादी की जीप देने की बात की। गुरुजी ने उनसे कहा – *तुम्हारे यहां तो आठ, दस या पंद्रह जने दर्शन करेंगे। लेकिन, दिल्ली मंदिर ले जाएंगे, तो वहां कितने लोगों को उस जीप का दर्शन होगा।* यूँ जो जीप काकाजी की लास्ट स्मृति की थी, वो आज यहाँ मौज़ूद है।

यूँ इन स्वरूपों का जीवन देखते हैं, तब दिमाग़ शून्य को पा जाता है कि हम कभी इन्हें पहचान भी पाएंगे? अभी पिछले साल विद्यानगर में काकाजी-पप्पाजी का फंक्शन था, तब हंसादीदी ने कहा था – *मैं अस्सी साल की हो गई, पर मुझे आज भी यह प्रश्न होता है कि मैं पप्पाजी को पहचान सकी हूँ? पप्पाजी जैसे थे, उन्हें तत्त्व से पहचाना था?* दीदी ने फिर कहा भी – *ये विभूतियाँ ऊपर से ऐसा ही वर्तन करेंगी कि पहचान में ही न आएँ।* कल्पवृक्ष हॉल में काकाजी के साथ दिनकरभाई की एक मूर्ति है। उसमें काकाजी हँसते हुए दिनकरभाई के हाथ पर ताली बजा रहे हैं। उस पर गुरुजी ने लिखवाया है – ऐसे फ्रेंड्ली गुरु कहां मिलेंगे? और साथ में काकाजी द्वारा बताए उनके हॅप्पीयेस्ट डे लिखे हैं, उसमें 28 मई 1966 जब संस्था से उन्हें विमुख किया था, उस दिन को भी उन्होंने हॅप्पीयेस्ट डे बताया! उनका कहना था कि बापा को हमारा कैसा भरोसा होगा, जो बापा ने यह स्टॅप लिया। देखा जाए तो बापा की नज़र से कुछ बाहर नहीं था। इस प्रकरण में काकाजी ने बापा का अभाव नहीं लिया कि ओहो, हमने तो बापा के लिए कितना किया; पूरा बिज़नेस छोड़ दिया - सब कुछ किया, ऐसी कोई भी बात नहीं। और तो और, संतों को भी अभाव नहीं आने दिया, उन्हें खूब बल दिया। पढ़े-लिखे

चालीस संतों को संस्था ने निकाल दिया था, उनका दिमाग़ तो कितना अभाव भी ला सकता था कि जिस गुरु के लिए दीक्षा ली, उन्होंने हमारे साथ ऐसा किया। पंजाबी भजन की यह लाइन–
कदे वी न आवे शिकवा; करां न कदे भी गिला, जे भी करदा सजना; होंदा ओदे विच भी भला – सुनती हूँ, तब यह प्रसंग बहुत याद आता है कि मैं कभी भी आपको शिकायत या कोई गिला-शिकवा न करूं। आप जो भी करते हैं, वो मेरे हित में ही होता है। काकाजी ने हमें ऐसा जीकर सिखाया। आज गुरुजी भी वैसा ही करते हैं। हमारी आध्यात्मिक-व्यावहारिक सब चीज़ों की चिंता वे लेकर बैठे हैं। उनके कारण हमारे जीवन में आधी रात को भी एक निश्चिंतता है कि गुरुजी से कहेंगे, तो सब ठीक होगा। आज कलियुग में ऐसी निश्चिंतता कौन दिला सकता है? कई बार गुरुजी के जॅस्चर्स देख कर स्तब्ध हो जाते हैं।

- अमदावाद के समीरभाई, डॉ. अर्ची से दांतों का ट्रीटमेंट कराने के लिए दिल्ली आए थे। ट्रीटमेंट कराने के बाद वे मंदिर आए तो गुरुजी ने उनसे पूछा – *समीर तुझे हलवा वगैरह कुछ खाना है?*

  बात तो छोटी-सी है, लेकिन भावुक हुए समीरभाई मेरे पास आकर रोते हुए कहने लगे – *दीदी, ऐसी कॅयर कौन करेगा?*

  इसी प्रकार, कल अमदावाद के भक्त जब ट्रेन से आ रहे थे और वे सुबह जल्दी स्टेशन पर उतरने वाले थे। तो, फोन करके उनसे कहा – *ट्रेन में से उतरने से पहले सब गरम कपड़ों से अच्छी तरह पॅक हो जाना; यहाँ बहुत सर्दी है।*

- पिछले साल अमदावाद की सुवास (भाभी) जुलाई में एक महीने के लिए दिल्ली मंदिर रहने के लिए आई हुई थीं। तभी अगस्त में सुवास के बर्थडे निमित्त उसके बच्चे – प्रीत और ऋचा आए थे। अगले दिन उन बच्चों को स्कूल जाना होगा, तो सुबह पौने पांच बजे की फ्लाइट से दोनों अमदावाद जाने वाले थे। रात को 12 बजे गुरुजी से 'जय स्वामिनारायण' कह कर सोने गए कि सुबह जल्दी निकल जाएंगे। उम्र में दोनों छोटे हैं, प्रीत 15 साल का और रुचा 12 साल की। पर, उन बच्चों के जाने के समय गुरुजी तो सुबह पौने तीन बजे बाहर सोफे पर बैठे थे। हम सोचें कि चलो कोई बड़ा हो तो ठीक है, लेकिन बच्चों को मूर्ति देने और छोटे से छोटे मुक्त का माहात्म्य समझाने के लिए उनका यह जॅस्चर था।

  सुवास ने गुरुजी से कहलवाया भी – *ये बच्चे तो चले जाते, आप सुबह-सुबह क्यों बैठे?*

  गुरुजी ने कहलवाया – *नहीं, मेरी नींद खुल गई थी, इसलिए मैं तो बैठ गया!*

यूँ, छोटी-छोटी बातों के लिए उनका हमारे लिए खूब कन्सर्न है, जो असल में हम निहार भी नहीं पाते कि हमारे लिए, साधु बिना किसी स्वार्थ के पर्सनल परिश्रम करता है। यहां हम जितने बैठे हैं, उन्हें अंदर से इतना तो ज़रूर ख्याल आएगा... अभी स्वाति दीदी ने बताया– ***गुरुजी 80 साल के हो रहे हैं। इतने सालों में हमने उन्हें क्या दिया और उन्होंने हमें क्या दिया?*** ये खूब सोचने की बात है, क्योंकि उन्हें किसी चीज़ का कोई लालच नहीं है।

- अनिता भाभी (दुरेजा) के मामाजी की लड़की समीक्षा दिल्ली मंदिर से काफ़ी जुड़ी हुई है। बहुत अच्छी पढ़ाई करने के बाद उसकी मुंबई में अच्छी जॉब लगी है।

मंदिर आकर उसने गुरुजी से कहलवाया – *मुझे अपनी सेलरी का 10 परसेंट मंदिर में देना है।*

गुरुजी ने उससे पूछवाया – *तुमने एज्युकेशन के लिए जो लोन ली थी वो पूरी हो गई?*

उसने कहलवाया – *नहीं, वो तो साइड बाई साइड चलती रहेगी, पर मुझे 10 परसेंट देना है।*

लेकिन, गुरुजी ने कहलवाया – *नहीं, पहले वो लोन पूरी कर लो। बाद में तुम्हें जो सेवा करने की इच्छा हो वो करना।*

आज जो नज़दीक से जुड़े हैं, उन्हें मंदिर के बारे में पता है कि किस ढंग से गुरुजी सारा व्यवहार चलाते हैं। किसी से कुछ कहे बिना मंदिर का सारा कारोबार कैसे चल रहा है! किस ढंग से वे इधर-उधर से सॅट करते हैं। वो लड़की अच्छी सेवा कर सकती थी, लेकिन तब भी गुरुजी ने उसे अपनी लोन पूरी करने के लिए कहा।

मेरा तो सिर्फ इतना ही कहना है कि अब हम सब जाग्रत बनें। कई बार तो हम साधु की भाषा भी नहीं समझ पाते हैं कि वे क्या कहना चाहते हैं...

यह बात इसलिए बता रही हूँ कि मेरी अल्प बुद्धि के मूल्यांकनों से गुरुजी की नापातोली करने में मेरा टाइम बहुत वेस्ट हुआ है। तो जिन चीजों से मैंने अपना समय बर्बाद किया, आप न करें। आप सबसे कोई चोरी है ही नहीं, सो यह प्रसंग बता रही हूँ।

* 2001 दिसंबर में मैं बड़ी सर्जरी करा कर आई थी। तब बाहर गेट के पास गुरुजी सोफे पर बैठे थे। मेरे साथ में मेरी पूर्वाश्रम की मधर और सत्संग की भाभियाँ भी थी। पाँच-छः दिन हॉस्पिटल में रहने के बाद, जैसे ही मंदिर में आई, तो गुरुजी ने कहलवाया –

  दीदी से कहो कि अब आराम-वाराम छोड़ें। 2002 में काकाजी के साक्षात्कार की सुवर्ण जयंती है, उसकी सेवा में लग पड़ें।

  मेरा ऑपरेशन दिसंबर में हुआ और फरवरी 2002 में तो काकाजी के साक्षात्कार के 50 साल पूरे हो रहे थे। ऑप्रेशन के समय तो मरीज़ ज़रा नाज़ुक दौर से गुज़र रहा होता है। ऐसा होता है मुझे कोई बहुत प्यार से बुलाए, ज़रा मेरी पीड़ा समझे। तो, मुझे मन में ऐसा हुआ कि हॉस्पीटल में सर्जरी कराने गई थी, कोई आराम करने तो गई नहीं थी। ऐसा हुआ कि मेरा दुःख और पीड़ा भी गुरुजी ने समझी नहीं कि ये इतनी बड़ी सर्जरी करा कर आई है और ऊपर से ऐसा कहलवा दिया। मुझे बहुत रोना आया और समाधि स्थान पर दर्शन करने चली गई। यहाँ तक कि पूर्वाश्रम की मधर विचार में पड़ गईं कि इसे तो कभी इतना रोते देखा नहीं, आज क्या हो गया? वे मुझे पूछती रहीं कि क्या बात है? तू क्यों रो रही है? मैंने कहा – *मुझे दर्द हो रहा है।* लेकिन, अंदर से तो मुझे पता था कि मैं क्यों रो रही हूँ।

  पिछले साल पुरी अंकल को हॉर्ट की कुछ तकलीफ आई। वे हॉस्पिटल से जब आने वाले थे, तो गुरुजी ने कहलवाया कि पुरी साहब से ऐसा मत कहना – *'पुरी अंकल आपको यह क्या हो गया, आप तो बहुत ढीले लग रहे हो। ज़्यादा पेइन तो नहीं हो रहा है?'* – जैसे हम अकसर पूछते हैं। तो, ढीला करने वाली बातें मत करना; उल्टा उन्हें ज़रा फोर्स में रखना कि कुछ नहीं हुआ है; कहना – *'आपका फेस पहले से और ज़्यादा अच्छा लग रहा है।'* ऐसा कहने से वे बल में आ जाएंगे। तब मैंने अपनी 2001 वाली बात टॅली की

कि उस समय गुरुजी ने जो मुझे कहलवाया कि आराम नहीं करना, सेवा में लग पड़ना, वो तो असल में मुझे बीमारी के ट्रॉमा में से बाहर लाने के लिए कह रहे थे। ताकि मैं सर्जरी के बारे में सोच कर ढीली न पड़ी रहूँ। कितने सालों के बाद वो प्रसंग टॅली हुआ! माइंड का फंक्शन ऐसा है कि किसी भी तरह साधु से या हरिभक्तों से वो हमें अॅट डिस्टंस पर ले जाना ही चाहता है। **माइंड का फंक्शन बहुत खराब है** और **इतनी-इतनी बातें सुनते हुए भी या इतने अनुभव होते हुए भी हम उसमें फंस ही जाते हैं।** देखा जाए 2001 में सत्संग में आए हुए मुझे कितने साल हो गए थे, तब भी मुझे ऐसा हो गया न कि गुरुजी ने मुझे समझा नहीं, जबकि उनकी भावना क्या थी?

अभी ही सुहृद्स्वामी की सर्जरी हुई है। तो, उनके लिए प्रभाकरभाई गुरुजी से पूछने के लिए गए कि ऊपर रूम में उन्हें सॅट कर दें? तो, तुरंत गुरुजी बोले– *नहीं, अकेले मत रखो। वे ऊपर अकेले क्या करेंगे? इससे अच्छा है कि नीचे पीछे के रूम में रखो, ताकि सबका आना-जाना लगा रहेगा, तो वे जल्दी इसमें से बाहर आ सकेंगे।*

मतलब साधु की भावना क्या होती है और हम उसे किस रूप में लेते हैं? इसलिए **गुरुजी में से जो कुछ भी आए, तो यही भजन की लाइन याद करें कि आप जो भी कर रहे हैं, वो मेरे भले में है।** हम एक बात पक्की मानें कि **उन्हें कोई स्वार्थ नहीं है। वे हमारी आध्यात्मिक और व्यावहारिक उन्नति के लिए ही बैठे हैं।** सुबह पौने छः-छः बजे से सोफे पर बैठ कर, सीधा रात के साढ़े ग्यारह-बारह बजे तक वे हमारे लिए ही बैठे रहते हैं। उनके परिश्रम को समझने का समय है।

अब 2017 का भी जो फंक्शन आ रहा है। मेइन तो गुरुजी को राज़ी करने के लिए फंक्शन करना है। तो, 6 अक्टूबर को मंदिर का स्टाफ मिल कर, गुरुजी से पूछने के लिए इकट्ठा हुआ कि आपकी क्या इच्छा है? हमारी भावना थी कि गुरुजी में से थोड़ा व्यू मिल जाए कि ऐसा-ऐसा करना है, तो उस ढंग से प्लानिंग शुरु कर दें।

सो, गुरुजी ने कहा– *सबसे पहले तो मेरी यही इच्छा है कि आप सब लोग आपस में प्रेम से, एक-दूसरे का स्वीकार करके, बिना किसी डिस्टंस से रहो। पैसे के लिए दिक्कत आने पर किसी से मांगना भी पड़ा, तो मांग लूंगा। लेकिन उससे पहले यह हो जाना चाहिए।*

अभी धनुर्मास के दौरान भी गुरुजी ने एक सूत्र लिखा था; *'पर्व-उत्सव इसलिए होते हैं कि आपस में सुहृद्भाव बढ़े...'*

सो, यदि हमारा आपस में एक-दूसरे का स्वीकार होगा, तो इस साल गुरुजी से हमें जो लूटना हो, वो लूट सकते हैं। काकाजी-पप्पाजी की शताब्दी का यह इयर चल रहा है, तो वे बहुत खुश होंगे। दिल की सच्चाई से हम जो भी मांगेंगे, वे जरूर वो दे देंगे। अभी शुभी ने अपनी प्रार्थना में कहा– *इस समय हमें और कोई दुःख नहीं है, सिर्फ अपने स्वभाव का दुःख है। बाकी तो सब कुछ महाराज ने बहुत अच्छी तरह से सॅटिंग करके दिया हुआ है। इतने अच्छे समाज में हमें रख दिया है।*

* समीर शाह अमेरिका से आया हुआ है, आज रात को वापिस जाने वाला है। अभी लॉस्ट वीक ही उसे वहाँ

बहुत अच्छी कंपनी में जॉब मिली है। मुझे बताने के लिए उसने फोन किया, तो मैंने काँग्रेच्युलेशन दिया।

समीर कहने लगा – *दीदी, एक बात कहूँ?*

मैंने कहा – हाँ।

उसने कहा – *मैं बचपन से गुरुजी को देख रहा हूँ।* (यहीं पर ही वो पला-पढ़ा हुआ है।) *तब से मेरी ऐसी ही ख़्वाहिश रही है कि गुरुजी को - ख़ास कर दिल्ली मंदिर को फाईनेन्स के लिए सोचना न पड़े। कोई फाईनेन्शियल कमी नहीं होनी चाहिए।*

मेरे ख्याल से 29-30 साल का लड़का है। पर, बचपन से उसकी ख़्वाहिश है कि मैं दिल्ली मंदिर को इतना सपोर्टीव बनूं कि गुरुजी को कभी फाईनेन्शियल चिंता न करनी पड़े। कैसे-कैसे मुक्त तैयार हुए हैं... पिछले जन्मों में हम बिछड़ गए होंगे, तो काकाजी ने हम सबको इकट्ठा किया है। हम इसका भरपूर फायदा उठाएं। ऐसे समाज में केवल आनंद ही करना है और कुछ नहीं करना है।

* स्वाति दीदी की गोल्डन ज्युबली के बारे में सबने बात की। स्वाति दीदी छोटी थीं, तब गुरुजी एक पोस्टर लाए थे; जिसमें एक नर्स बच्चे के मुंह में थर्मोमीटर लगा रही है। तब स्वाति दीदी ने भगवान भजने के बारे में कुछ डिसाइड नहीं किया था। पर, गुरुजी ने वो पोस्टर स्वाति दीदी को भिजवाते हुए कहलवाया था – *तुम्हें नर्स बनना है।* फिर 1986 में तो काकाजी ने स्थूल शरीर छोड़ दिया। तब गुरुजी की हालत हम सबने देखी थी। वह देखकर स्वाति दीदी ने स्टडी छोड़ दी; उनका पढ़ाई में मन ही नहीं लगता था। लेकिन, गुरुजी ने इतने सालों पहले संकल्प किया था कि ये नर्स बनेगी; तो, आज बिल्कुल नर्स की तरह ही सेवा करती हैं। इतने सालों पहले ही गुरुजी ने बता दिया था कि उन्हें किस सेवा के लिए महाराज ने चुना है। ऐसे ही सब बहनों में अलग-अलग गुण हैं। सब बहनों को सभी हरिभक्तों के प्रति भी खूब प्यार है। मैं तो सारा दिन देखती हूँ कि इन्हें ऐसा होता है कि किस भक्त के लिए क्या कर दें! क्योंकि गुरुजी की जीवनशैली देखी है कि गुरुजी भक्तों के लिए कोई भी रिज़र्वेशन नहीं रखते। उनके पास जो भी अच्छी से अच्छी चीज़ होगी, तो उन्हें ऐसा ही होता है कि मैं किस हरिभक्त को दे दूँ। वही जीवन शैली देखते-देखते बहनों के जीवन में भी ऐसा ही आया है...

आज अभी भी काकाजी गए नहीं हैं। गुरुजी के रूप में हमारे साथ हैं।

* आज मुंबई से स्वीटी दीदी आई हैं। अमदावाद के समीरभाई की सिस्टर हैं। अभी 7 तारीख को उनके हस्बन्ड एक्सपायर हो गए और कल ट्रेन से निकल कर आज यहां फंक्शन में आई हैं, मतलब 4 दिन में ही! तो, गुरुजी का उन्हें कैसा भरोसा होगा? वर्ना कल्पना करें कि 4 दिन पहले ऐसा हुआ हो, तो मन में यही होगा कि हाय, सब क्या सोचेंगे? सब मेरे बारे में क्या कहेंगे? मिलने के लिए आने वाले क्या कहेंगे? तो, गुरुजी ने भी आज कैसा जॅस्चर किया कि वे अपने हस्बन्ड की अस्थियाँ लेकर आईं, वो गुरुजी ने काकाजी के समाधि स्थान की घास पर छंटवाईं।

  स्वीटी दीदी के हस्बन्ड राजनभाई को बहुत ज़्यादा तकलीफ-पीड़ा हो रही थी, तो भीतर में प्रार्थना करती थीं कि इन्हें मुक्ति मिले। लेकिन, स्वीटी दीदी के मामा कनुभाई ने मन में सोचा कि धनुर्मास चल रहा है, तो ऐसे दिनों में कुछ नहीं होना चाहिए। पौष के महीने में अब संक्रांति के बाद शुभ काल शुरू होगा; सो,

महाराज को राजन कुमार को ले भी जाना है, तो धनुर्मास-संक्रांति के बाद ले जाएँ। एक तरफ स्वीटी दीदी को अंदर से पूरा विश्वास था कि कुछ भी घटना बनेगी, तो वो काकाजी की डेट 7 तारीख को ही बनेगी। तो, काकाजी ने मामा के सपने में आकर डांटा–

शुं वेदिया ब्राह्मणनी जेम कर्या करे छे के संक्रांत पछी-संक्रांत पछी। हुं सातमी तारीखे लई जवानो छुं – त्रण वागे।

और... वाक़ई 7 जनवरी को 3 बजे ही काकाजी राजन कुमार को ले गए। अभी भी हमारे चैतन्य की परवरिश काकाजी वैसी की वैसी करते हैं न! स्वीटी दीदी ने तो काकाजी को स्थूल रूप से देखा भी नहीं हैं। लेकिन, उन्हें कुछ भी प्रॉब्लम होती है, तो वो सीधा ताड़देव 6/डी, सोनावाला बिल्डिंग में जाकर काकाजी के रूम में भजन करती हैं और प्रॉब्लम सॉल्व हो जाती है।

सच, ऐसी समर्थ गोद में बैठ जो गए हैं, उससे हम सनाथ हो गए हैं। तो, सारी बौद्धिक गिनतियों में टाइम वेस्ट करने जैसा नहीं है। जैसे कि गोवर्धन पर्वत तो श्री कृष्ण ने उठाया था, लेकिन जिन्होंने उसमें अपनी उंगली लगा दी, वे 'भगत' कहलाए गए। तो, **2017 के फंक्शन में तन, मन, धन और आत्मा से अपनी बुद्धि के सारे दायरे छोड़ कर कि बस, गुरुजी में से जो आए वही करते हुए काकाजी को वश कर लेना है** और... उसमें भी जैसे ज्योति बहन ने कहा है–*तुम्हें तो साक्षात् गुणातीत मिले हैं।* तो, यह एक ही सन्टेन्स में उन्होंने पूरा रहस्य बता दिया। सच, इन्हें लूट लेने जैसा है। हम तो कितने सारे जने हैं, एक मुट्ठी बन जाएगें, तो बहुत बड़ा काम होगा। काकाजी-पप्पाजी राज़ी हों और गुरुजी के दिल में ठंडक हो, ऐसा हमें करना है। तो हम सब उसमें लग पड़ें; हमारी सब प्रार्थना महाराज सुनें...

* पिछले साल दीवाली के दिनों में अमदावाद के ध्रुव ने बहुत अच्छी बात की थी, उसे याद करके मैं रोज प्रार्थना करती हूँ। जैसे अभी किसी ने प्रार्थना करी, उसी तरह ध्रुव ने प्रार्थना करते हुए कहा– *गुरुजी, हम सब अपने स्वभाव छोड़ सकें।*

  तो, गुरुजी ने बीच में ही पूछा– *स्वभाव क्यों नहीं छूटते होंगे?*

  किसी ने उत्तर नहीं दिया, तो गुरुजी ने अपने आप ही उत्तर देते हुए कहा–*हमें जितने बड़े पुरुष मिले हैं, हमने उन्हें उतना बड़ा माना नहीं। पेरेन्ट्स ने भले सालों पहले भी सोने का सेट दिया हो, लेकिन अंदर एक भरोसा रहता है कि वह तो पक्का खरे सोने का ही है। तो, हम उसे कितना संभाल कर रखते हैं। पर, हमें जितने बड़े मिले हैं, उनकी महिमा वैसी जानी नहीं, इसलिए स्वभाव छूटते नहीं हैं।*

हम सब अपने भीतर झांकेंगे, तो जरूर पता चलेगा कि मेरा यह स्वभाव मुझे परेशान करता है, क्योंकि गुरुजी के रूप में हमें एक विभूति मिली है, यह हमने दिल की सच्चाई से माना नहीं है।

पप्पाजी ने मुझे एक लेटर में लिखा है– *तुम्हारे लिए पूर्ण पुरुषोत्तम स्वरूप यानि गुरुजी!*

तो, हम यदि उस भावना से देखेंगे-सेवा करेंगे, तो हमारे अंदर वो सुख ज़रूर आना चाहिए। अभी हम सत्संग करते हैं, लेकिन जो सुख आना चाहिए, वो नहीं ले पा रहे हैं। पर, इस भाव से सेवा करेंगे कि ओहो! मैं तो गुरुजी के रूप में श्रीजी महाराज की सेवा कर रही हूँ, तो हमें हंड्रेड परसेंट का हंड्रेड परसेंट फल मिलेगा ही... सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

(ध्वनिमुद्रण से संकलित)

❀❀❀

श्रीहरि एवं तत्स्वरूप विभूतियों के प्राकट्य पर्व पर...

5 अप्रैल – रामनवमी, भगवान स्वामिनारायण की प्रागट्य तिथि!

12 मार्च – होली, अनादि महामुक्त ब्रह्मस्वरूप भगतजी महाराज की प्रागट्य तिथि!

13 मार्च – धुलेन्डी, संतभगवंत प.पू. साहेबजी की प्रागट्य तिथि!

जीव-प्राणी मात्र के कल्याण हेतु ही **भगवान स्वामिनारायण** ने भारत की वसुधा को पसंद करके, सन् 1781 की चैत्र शुक्ल रामनौमी के दिन छपिया गाँव में पिता धर्मदेव एवं जननी भक्तिदेवी के गृह को अपने प्रागट्य से पावन किया। बालपन में अनंत लीलाओं-चरित्रों द्वारा अनेक जीवों का उद्धार तो किया ही। पर, सदा साकार रूप से धरा पर प्रगट रहने के लिए वे अपने धामरूप अनादि अक्षरब्रह्म गुणातीतानंदस्वामिजी को भी साथ में लेकर आए और... जीवंत 'स्वामिनारायण' मंत्र देकर, ब्रह्मरूप होकर परब्रह्म की भक्ति करने का अद्भुत मार्ग प्रशस्त किया। फलस्वरूप 'स्वामिनारायण संप्रदाय' की स्थापना हुई। शास्त्रों के परे 'प्रगट' की उपासना का प्रतिपादन करने वाली यह विचारधारा, सामान्य जन की बुद्धि के दायरे से बाहर थी। लेकिन, करुणानिधि प्रभु ही स्वयं जीवों पर करुणा करके अनादि महामुक्तों की देन देकर निहाल करते रहे हैं।

हठ, मान, ईर्ष्या को जड़ से निर्मूल करने का प्रतीक **'होलिका दहन'** का अद्भुत दिन अनादि के महामुक्त **ब्रह्मस्वरूप भगतजी महाराज** के प्रागट्य से और भी महत्त्वपूर्ण बन गया! क्योंकि – ब्रह्मस्वरूप भगतजी महाराज ने मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी को तत्त्व से जान कर, उनकी प्रत्येक क्रिया-आज्ञा में अपना जीव जोड़ कर, अध्यात्म के उच्च शिखर पर पहुँचने का आदर्श स्थापित किया।

जूनागढ़ मंदिर के निर्माण हेतु ब्रह्मस्वरूप भगतजी महाराज ने देह को गिने बिना लगातार छः दिन तक चूने की भट्ठी में कार्य किया; तब मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी ने अत्यंत राज़ी होकर उन्हें दो-तीन बार गले से लगाया। ब्रह्मस्वरूप भगतजी महाराज के तो हर्ष के अश्रु बहने लगे और मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी ने उन्हें एक करामत बताई – *'प्रागजी! चूना बनाने के लिए जैसे भट्ठी में उपलों, लकड़ियों और पत्थरों को एक के ऊपर एक रख कर, इन सब के ऊपर घास का गोला रख कर, अंगारा डालने से सब कुछ जल कर भस्म हो गया और अच्छा चूना बन गया। वैसे ही उपले के स्थान पर स्थूल देह है, लकड़ी के स्थान पर सूक्ष्म देह और काले पत्थर के स्थान पर कारण देह हैं और अग्नि के स्थान पर श्रीजी की मूर्ति है। श्रीजी की मूर्ति नेत्र में स्थिर रख कर, वचन में विश्वास करके, अखंड भजन करें, तो थोड़े ही दिन में अग्निरूपी श्रीजी की मूर्ति तीन देह, तीन अवस्था और तीन गुणों के भावों को जला कर भस्म कर देगी। तब केवल अक्षरधाम, महाराज की मूर्ति, अपनी आत्मा और मुक्त ही नज़र में रहेंगे... अक्षर के साथ एकता होने पर महाराज अणुभर दूर नहीं रहेंगे...'*

ब्रह्मस्वरूप भगतजी महाराज के लिए तो मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी का वचन ही संपूर्ण विधि थी... अतः इस सैद्धांतिक बात के अनुरूप ही वर्तने की लगन लगा ली। अपनी वृत्ति केवल स्वामी में जोड़ कर, जप, तप, सेवा और भजन का व्यसनी बन कर, प्रत्यक्ष मूर्ति में लयलीन रहते हुए आत्मस्वरूप अवस्था में मग्न रहते हुए श्री अक्षरपुरुषोत्तम के परम रहस्य को आत्मसात् किया।

और… मूलतः श्रीजी महाराज द्वारा प्रतिपादित इस रहस्य को अत्यधिक कसनी-विरोध सह कर, गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज एवं गुरुवर्य योगीजी महाराज ने दिगंत में विकसित करने के लिए स्वामिनारायण संप्रदाय में न केवल क्रांतिकारी डग भरा, वरन् आश्रित मुमुक्षु की आध्यात्मिक प्रगति हेतु, गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी द्वारा **'प्रगट की उपासना'** का मानो बिगुल बजवा दिया और 'गुणातीत समाज' का सर्जन हुआ। साथ ही, प्रगट ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, संतभगवंत प.पू. साहेबजी, प.पू. गुरुजी, प.पू. निर्मलस्वामिजी, प.पू. दिनकरभाई एवं प.पू. भरतभाई जैसे 'अध्यात्म विशेषज्ञों' के रूप में जीव के रोग टालने की संजीवनी दे दी।

इन विशेषज्ञों में, **धुलेन्डी** के शुभ दिन **संतभगवंत प.पू. साहेबजी** का प्रागट्य यही संकेत देता है कि मनुष्य को यदि अपने जीवन को शाश्वत् हर्ष से रंगीन रखना है, तो उसका एकमात्र उपाय है – प्रभु के अखंड धारक सच्चे संत का जोग! वाक़ई, संतभगवंत प.पू. साहेबजी का संबंध व सान्निध्य प्रभु के समीप ले जाता है। उनका उपदेश जीव में अनोखा उत्साह भरता है। **प.पू. गुरुजी** तो अकसर कहते हैं – *साहेब की एक विशेषता यह है कि सायन्स के स्नातक होने के कारण, साहेब शास्त्रों-पुराणों या अक्षरपुरुषोत्तम के गूढ़ रहस्य को सामान्य दृष्टांतों द्वारा खूब सहजता और सरलता से स्पष्ट कर देते हैं; जिसे सभी आसानी से समझ कर अमल कर पाते हैं।*

तो आइए, **भगवान स्वामिनारायण, ब्रह्मस्वरूप भगतजी महाराज** एवं **संतभगवंत प.पू. साहेबजी** के **प्रागट्य पर्व** निमित्त, अनुपम मिशन द्वारा प्रकाशित संतभगवंत साहेबजी की अमृतवाणी की पुस्तक – **'छे माहात्म्यसभर वाणी सदा'** भाग-1 में निहित निम्न अमृतवचन से स्वयं को कृतार्थ करें…

धर्म एवं विज्ञान का समन्वय… सुखी करेगा

अध्यात्मज्ञान भारत की नींव है। आध्यात्मिकता उसकी नस-नस में फैली है। **आध्यात्मिकता यानि – विज्ञान एवं धर्म का समन्वय। धर्म के बिना केवल विज्ञान व्यक्ति को नास्तिकता की ओर ले जाएगा…** जिससे व्यक्ति के जीवन में से प्रेम, आत्मीयता, सुहृद्भाव, सहनशीलता इत्यादि की समाप्ति हो जाएगी और जीवन शुष्क बन जाएगा। जीवन में से आनंद खतम हो जाएगा। **गुणातीतानंदस्वामी के कहे अनुसार बिना नमक के भोजन जैसा जीवन हो जाएगा।** इसी प्रकार **धर्म हो और विज्ञान साथ में न हो, तो धर्म में अंधश्रद्धा आ जाएगी।** वहम, संकुचितता, कट्टरता आ जाने पर जीवन दुःखी हो जाएगा। हिंद के गाँवों में विशेषतः अंधश्रद्धालु हैं, सो घी-दूध के गिर जाने को अपशगुन मानते हैं, बिल्ली के रास्ता काट जाने से या विधवा स्त्री के सामने आ जाने को अपशगुन मानते हैं। धर्म तो आत्मबल बढ़ाता है, जबकि ऐसी बातों द्वारा तोड़ने का कार्य होने लगता है। धर्म में कट्टरता ने आज समग्र मानवजाति को दुःख के गर्त में धकेल दिया है। आज हर जगह पर धर्म के नाम पर विवाद है… धर्म के नाम पर संघर्ष है… धर्म के नाम पर लोगों का जीवन दाव पर लगता है और धर्म के नाम पर ही दो दिलों के बीच दीवार खड़ी हो जाती है। **धर्म और विज्ञान का यदि समन्वय होगा, तो ही सही अर्थ में मानव सुखी होगा।**

पुरातन काल में प्रगट हुए राम, कृष्ण आदि अवतार एवं ऋषि-मुनि आर्षदृष्टा थे। उनके जीवन में विज्ञान और धर्म का समन्वय था। वे विज्ञान में पारंगत थे, विद्याओं में निपुण थे और वे विज्ञान व विद्या का उपयोग करके धर्ममय जीवन जीते थे। उनमें वहम और अंधश्रद्धा न होने के कारण, उनका जीवन आदर्शपूर्ण था और

ऐसे गुरु स्वयं मूर्तिमान आश्रम बन गए थे। ऐसे गुरु के पास राजा या रंक, छोटे-बड़े सभी जाते और आत्मा का आनंद प्राप्त करते, जीवन की जटिल समस्याओं का समाधान पाते। ब्रह्मविद्या प्राप्त करने के वे गुरुकुल थे।

ऐसे समर्थ **गुरुओं की विरासत मिलने से भारत वर्ष का आध्यात्मिक वैभव बरकरार है।** ऐसे दिव्य गुरुओं के पास जो भी जीव आता, वह ब्रह्मविद्या सीख कर अपना जीवन धन्य कर लेता।

काल क्रम से विज्ञान पश्चिम में चला गया और धर्म हमारे पास रहा है। पाश्चात्य संस्कृति में समृद्धि से लिप्त मनुष्य के पास जीवन जीने का आनंद नहीं रहा और भारतीय संस्कृति में से विज्ञान चला गया, तो अंधश्रद्धा तथा वहम के कारण मानव दुःख में सड़ता है। हमारे मंदिरों में भक्तों की भीड़ उमड़ती है। संत और साधु की जमात अत्यधिक है, लेकिन सही दिशा में कदम न होने के कारण दुःख बढ़ते हैं, घटते नहीं।

दो सौ साल पूर्व प्रगट हुए भगवान स्वामिनारायण ने मानवजाति पर कृपा की और धर्म को विशुद्ध करने का संकल्प किया। धर्म को जीवन में बुन कर, उसके उमदा तत्त्वों का स्वीकार करके, ज्ञान-विज्ञान को सही अर्थ में समझ कर जीवन जीने वाले 'गुणातीत' को स्वयं के साथ लाए और उनकी पहचान कराई। मानव यदि सच्चा मानव बन कर रहे, तो प्रेम, करुणा, आत्मीयता, सुहृद्भाव आदि शुभ गुण छलकेंगे; पर मानव में कुछ अंश पशुता का पाश रह गया हो, सो द्वेष, क्रोध और कुटिलता जैसे दुर्गुणों की मिलावट होने से दुःखी होते हैं। आज मानव संपूर्णतया सुखी नहीं, क्योंकि अहंकार के वश हठ, मान, ईर्ष्या से युक्त जीवन जीता है।

दोषयुक्त जीवन को निर्दोष बनाने के लिए, सच्चे मानव बनने के लिए त्रिगुणातीत अवस्था में पहुँचे हुए दिव्य पुरुष की शरण लेना अनिवार्य है। जब गुणातीतभाव में जीते हो जाएंगे, तभी सच्चा सुख प्राप्त होता है। महल में निवास करने वाला राजा (या प्रधान) भी आज दुःखी है और झोंपड़ी में बैठा हुआ गरीब भी दुःखी है। पढ़ा-लिखा दुःखी है और अनपढ़ भी दुःखी है। नास्तिक दुःखी है और नासमझी से, भगवान का भजन करने वाले भक्त भी दुःखी हैं। दुःख मात्र को टाल कर सुखी होना हो, तो गुणातीतभाव युक्त जीवन जीना पड़ेगा। गुणातीतभाव युक्त जीवन जीना सामान्य व्यक्ति की गुंजाईश से बाहर है। अपने अहं का विसर्जन करके कि मैं कुछ भी नहीं, ऐसा भाव प्रगटा कर प्रभु के होकर जीवन जीना असंभव है। जब तक हमें 'स्व' के भाव का ज्ञान ही न हो, तो टाल कैसे सकते हैं?

किसी को बुखार आया हो, लेकिन पता ही न हो कि मलेरिया है या टाईफॉईड है! बुखार किस कारण से आया है, यह ख्याल ही न पड़े तो दवाई किस प्रकार लें! इसी तरह जब हमें ख्याल ही नहीं कि अहंभाव यानि क्या? तो अहंभाव टालेंगा किस प्रकार? अतः अहंभाव टाल कर, ब्रह्मभाव में रहते होने के लिए हमारी कुछ मर्यादाएँ हैं, उसे किस प्रकार लांघनी यह प्रश्न है।

'गुणातीतानंदस्वामी की बातें'–यह पुस्तक अद्भुत है। उसमें एक सरल दृष्टांत द्वारा असंभव वस्तु को संभव बनाने की सूझ दी है... उसका भाव कुछ इस प्रकार है...

कोई तैराक छोटा झरना तैर सकता है। उससे बड़ा तैराक बड़ी नदी तैर कर दूसरे किनारे पहुँच सकता है। उससे बड़ा हो तो इंग्लिश चैनल तैर कर फ्रांस के किनारे पर पहुँच सकता है। लेकिन, मुंबई के समुद्र में छलाँग लगा कर मोम्बासा पहुँचने वाला कोई नहीं मिलेगा, क्योंकि सागर को तैर पाना असंभव है। प्रत्येक व्यक्ति की अपनी मर्यादाएँ हैं; थकान लगे या भूख लगे... सो, वह संभव नहीं। इसलिए यदि स्टीमर में बैठ जाएंगे, तो

समुद्र को पार कर लेंगे। विमान में बैठ जाएंगे तो दो-तीन समुद्र लांघ कर अमेरिका पहुँच सकते हैं... इस प्रकार व्यक्ति अहंकाररहित नहीं हो सकता... मुश्किल है, पर **यदि अहंकार से रहित हुए साधु से जुड़ कर उनसे आत्मीयता कर लें, उन्हें अपनी 'आत्मा' मान लें, तो ब्रह्मभाव में अखंड रहने वाले वे साधु उसे मानव के भाव में से ऊपर उठा कर ब्रह्मभाव में रख देंगे।** परंतु, **यह अनिवार्य है कि जिस साधु के साथ जीव जोड़ें, वह गुणातीत अवस्था वाला संत होना चाहिए।**

श्रीजी महाराज ने तीन हज़ार संतों को दीक्षा दी थी, लाखों हरिभक्त बनाए थे। शास्त्र और मंदिर भी अद्‌भुत रचे थे। तीन हज़ार में से पाँच सौ तो 'परमहंस' बने। उन्होंने महाराज के वचनानुसार जीवन जिया। फलस्वरूप, अंतर में केवल महाराज ही रखे। परंतु, अपना समग्र अस्तित्व प्रभु में विलीन करके, प्रभु को अखंड प्रगटा कर, प्रति पल प्रभु के संकल्पानुसार कार्य करके, प्रभु के साथ एकत्व को पाए 'गुणातीत' साकार ब्रह्म ही महाराज के वारिसदार बने।

श्रीजी महाराज ने हम सभी पर जो बहुत बड़ी कृपा की, वह यह है कि गुणातीत स्वरूपों की विरासत पृथ्वी पर चिरंजीव बनाई है। भगतजी महाराज, जागास्वामी, कृष्णजी अदा, शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी एवं सांप्रत काल में प्रमुखस्वामिजी, महंतस्वामिजी, हरिप्रसादस्वामिजी, अक्षरविहारीस्वामिजी, पप्पाजी, बा, बेन आदि बख़्शिश में दिए हैं। इन प्रत्यक्ष स्वरूपों की कृपा से ही इन संत भाइयों की भेंट हमें मिली है। ये संत हमारे गुरु हैं। ऐसे **दिव्य गुरुओं की कृपा से-संबंध से ही हम प्रभु की पहचान कर सकते हैं और यथार्थ रीति से पा सकते हैं।** हम अपने आप प्रभु को पा नहीं सकते, क्योंकि हमारी कई कितनी मर्यादाएँ हैं। हमारी दृष्टि में मायिकभाव है, हमारी बुद्धि और चित्त में जगत है। ऐसी हालत में प्रभु को देखना कठिन है। जैसे दाल से भरे बड़े कटोरे में छोटा-सा कंकर गिर जाए, तो उसे ढूँढ कर फेंक देना कठिन है। वैसे ही **यह मानव देह मिला, अद्‌भुत माहौल मिला, अच्छी सानुकूलता है, फिर भी आनंद नहीं ले पाते, उसका कारण मायारूपी कंकर है–जगत के प्रति आसक्तभाव है। प्रभु को राज़ी करने में वह बाधारूप है।** इस **मायारूपी कंकरी को ढूँढ कर, उसे दूर करके जीवन को आनंदमय बनाने के लिए संतों की आवश्यकता है।** योगीबापा की अपरंपार कृपा और हमारे प्रत्यक्ष स्वरूपों की परवरिश एवं गढ़ाई से हमें ये संत प्राप्त हुए हैं। जीवन में उनका स्थान हो जाए, तो अहंकाररहित होकर अध्यात्म के साथ विज्ञान का जो समन्वय उन्होंने स्वयं में किया है, उनके समागम से वह हम में आएगा और उन्नत सामाजिक जीवन का हम में समावेश होगा।

योगीजी महाराज ने हमारे द्वारा छात्रालय की प्रवृत्ति शुरू कराई और शिक्षण क्षेत्र में जाग्रत समाज का निर्माण करने का आदेश दिया। व्यक्ति में शिक्षा होगी, तो वहम और अंधश्रद्धा से बचेंगे। झूठे चमत्कारों और अघटित बातों से दूर रहेंगे तथा शुभ किसमें निहित है, वह स्वस्थ चित्त से सोच सकेंगे।

कोई यदि कहे कि फलां गुरु ज़मीन से ऊपर उठ कर हवा में चलते हैं, तो यह जान कर अचंभित होने के बजाय शिक्षित व्यक्ति कहेगा– *प्लेन में बैठ जाओ, तो तुम भी हवा में उड़ने लगोगे।* कोई कहे कि हमारे गुरु गाड़ी में कहीं जा रहे थे और पेट्रोल खतम हो गया था, फिर भी कुछ किलोमीटर गाड़ी चली। यह सुन कर वह कहेगा – *भाई! गाड़ी में पॅट्रोल की सुई पॅट्रोल खतम होने का निर्देश करती है, फिर दस-पंद्रह किलोमीटर तक तो गाड़ी रिज़र्व पॅट्रोल से चलती है।*

योगीबापा ने 1960 के वर्ष में युवा प्रवृत्ति शुरू की, तब कई उन्हें सलाह देते– *बापा! यह तो 'वानर सेना' कही जाए, इनके पीछे क्यों समय बिगाड़ते हो ?* तब बापा ने मौनपूर्वक जवाब दिया– *समय बीतने दो, तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर तुम्हें अपने आप मिल जाएगा।* बापा को विज्ञान और धर्म का समन्वय करना था और समाज में उसको फैलाना था। इसीलिए उन्होंने गुरुकुल बनाए, पाठशाला - कॉलेजों की स्थापना करवा कर , धर्म में से वहम-अंधश्रद्धा को निर्मूल करके समाज सेवा के अद्भुत कार्य किए। आज शिक्षण क्षेत्र में शुष्कता, नास्तिकता, भ्रष्टाचार व्याप्त हो रहे हैं। सो, उसके निवारण हेतु उन्होंने आर्षदृष्टि से विनम्र, पवित्र और सेवाव्रत से जुड़े साधु-संतों को एक क्षेत्र दिया और युग परिवर्तन करने का कार्य सौंपा। अब इन संतों द्वारा जिस समाज का निर्माण होगा, उस समाज में धर्म और विज्ञान का समझदारी युक्त समन्वय होगा। उसमें नात-जात की सीमा नहीं होगी, सत्ता के लिए खींचतान नहीं होगी, छोटे-बड़े का भेद नहीं होगा, बल्कि केवल आदर्श जीवन जीने की कला का शिक्षण देने का संपूर्ण प्रयत्न होगा। वहां लौकिक विद्याओं के साथ ब्रह्मविद्या का प्रसार होगा।

सामाजिक उन्नति का ऐसा अध्यात्मज्ञान अपने जीवन और वर्तन से आज समाज को दें, ऐसे गुरुओं की आवश्यकता है और योगीबापा ने ऐसे दिव्य गुरुओं की हमें बख़्शिश दी है। इनके आश्रय में जाने से और उनकी कृपा प्राप्त करने से हमारा जीवन आनंदपूर्ण बनता है।

बापा ने हम पर बहुत बड़ी कृपा की कि हमें गुणातीत स्वरूपों की भेंट दी। **गुणातीत स्वरूपों ने मनुष्य देह धारण किया है, सो उनके प्रति मनुष्यभाव आ जाता है, तब उसमें से उबरने के लिए सच्ची सूझ देकर हमारा पोषण करने वाले साधुओं की भी बापा ने ही भेंट दी।**

मनुष्य में आसक्ति और विषय दोनों हैं। **'विषय' क्या है ?** इस प्रश्न की चर्चा करते हुए श्रीजी महाराज ने कहा है – **भगवान को विस्मृत कराए वह 'विषय'। भगवान राज़ी न हों ऐसी वाणी, विचार या वर्तन हो वह 'विषय'। इसमें से हमें बाहर निकालने के लिए उनका संकल्प कार्यरत रहता है। ऐसे संकल्प के धक्के से जब हम विह्वल होते हैं, तब ये साधु हमारा हाथ पकड़ कर जतन करते हैं।** साधक भाइयों में शांतिभाई, अश्विनभाई, सनंदभाई, रतिभाई इत्यादि, संतों में कोठारीस्वामिजी, गुरुजी, प्रेमस्वामिजी, महापुरुषस्वामिजी–ऐसे ही बहनों के लिए ऐसी साध्वी बहनें हैं। **ऐसे साधु के प्रति यदि हमें लगाव होगा, उनके प्रति यदि हमें असाधारण भाव होगा, तो हमारे जीवन में क्रांति आएगी। हमारे जीवन में परिवर्तन आएगा।**

अभी प.पू. काकाजी का अमृतपर्व मनाया, तब पू. गोरधनकाका ने अच्छी बात की। एक साधक उनके पास आया था। पू. गोरधनकाका ने उस साधक से स्पष्ट कहा– *'ऐसे साधु को तू राज़ी करेगा, तो पप्पाजी, काकाजी और सभी गुणातीत स्वरूप राज़ी होंगे, वर्ना तो नहीं होंगे। अन्य सभी तो तुझे निभाया करेंगे...'*
पू. गोरधनकाका ने साधना का यह रहस्य समझाया कि ऐसे साधु हमें सच्ची दृष्टि देते हैं। तुम्हें दर्द होता हो और डॉक्टर के पास जाओगे तो वह डॉक्टर तुम्हें जहाँ दर्द होता होगा, वहाँ दबा कर जाँचेंगे। इस प्रकार हमारी साधना में बाधा डालते अनेक प्रकार के विघ्नों को दूर करने के लिए साधु जब आतुर हों, तब यदि ऐसे साधु को हम गिने नहीं, उनके साथ उद्दंडता से व्यवहार करें, उनकी अवहेलना करें, तो वे तो क्षमामूर्ति हैं, वे सहन कर लेंगे, लेकिन हमारा दर्द मिटेगा नहीं।

सो, ऐसे **साधु के प्रति संपूर्ण निर्दोषभाव रखना! कैसी भी परिस्थिति में वे मेरे हितैषी हैं, मेरे हित के लिए ही करते हैं, ऐसा विचार चौबीस घंटे और बारह महीने रहे, उसे कहा जाए– 'संपूर्ण निर्दोष माना।' ऐसा निर्दोष मान कर, उस भाव से ऐसे साधु की आज्ञा पालेंगे, तो हमारे जीवन में गुणातीत स्वरूपों की प्रसन्नता अवतरित होगी। फलस्वरूप हमारे जीवन में परिवर्तन आएगा और इसी हेतु तो हम इस मार्ग पर चले हैं।**

भगवान की खूब-खूब प्रसन्नता के कारण यह मानवदेह मिली है। असंभव बात संभव बनीः मानव देह हमें मिली, दुर्लभ सत्संग मिला, प्रत्यक्ष नरतनुधारी गुणातीत पुरुष मिले और उनकी पहचान कराने वाले साधु भी मिले! यूं, अब तो अद्‌भुत सानुकूल समय है। तो, आज हम प्रार्थना करते हैं कि ऐसे साधुओं में निर्दोषभाव रख कर, उनकी आज्ञा में हमारे जीवन को ढालें और जब ऐसा न कर पाएं, वहां भजन और प्रार्थना का बल लें। इस प्रकार बाधा डालते हमारे भावों को आपके चरणों में समर्पित करके-आपकी प्रसन्नता प्राप्त कर सकें ऐसा बल, बुद्धि और प्रेरणा देने की कृपा कीजिए।

❁❁❁

अलविदा–प.भ. मोहितभाई परिख!

15 फरवरी की सुबह साढ़े छः बजे जब खबर मिली कि हमारे **आत्मीय प.भ. मोहितभाई परिख** का निधन हो गया; सुन कर आश्चर्य हुआ और गहरा दुःख पहुँचा। क्योंकि–पाँच दिन पहले ही तो वे मंदिर आए थे और यहीं से ऑफिस की अपनी सारी एपॉईन्टमेन्ट्स रद्द करके, तकरीबन ढाई घंटे तक प्रसन्नचित्त बैठे थे... पर, बातों-बातों में इनकी वाणी द्वारा प्रभु ने हमें इशारा दिया, जो हमें 15 को ही समझ आया। वे बोले थे– *आज अब ऑफिस नहीं जाऊँगा, यहीं बैठा हूँ; मुझसे जो कुछ पूछना-करना हो, आज पूछ लो।*

धार्मिक एवं सामाजिक प्रकृति के प.भ. मोहितभाई परिख बहुत ही सुलझे हुए, विचक्षण एवं परोपकारी चार्टर्ड एकाउंटंट थे। वर्षों पहले, उन्हें गुरुहरि काकाजी महाराज का परिचय एवं दर्शन हुआ। तभी से गुरुहरि काकाजी महाराज की इच्छा एवं आज्ञानुसार प.भ. मोहितभाई ने हमारे मंदिर के एकाउंट्स-ऑडिट का कार्यभार संभाला और खूब अपनेपन से सेवा की। दिल्ली गुजराती समाज जैसी दिल्ली की कई संस्थाओं के विभिन्न पदों पर रहते हुए, उन्होंने कई उत्कृष्ट कार्य किए।

वाक़ई, **गुरुहरि काकाजी महाराज जैसे अखंड प्रभुधारक संत के दर्शन और अद्‌भुत सेवा के फलस्वरूप वे कल्याण के सच्चे अधिकारी बने ही हैं।** अपने उन्नत कार्यों द्वारा वे हमेशा हमारी स्मृति में रहेंगे।

दूसरी ओर – उनकी स्थूल विदाई एक भारी कमी तो है ही; सो भगवान स्वामिनारायण के श्रीचरणों में प्रार्थना करते हैं कि उनके पूरे परिवार व उनसे संबंधित समाज को इस कमी से उबरने का बल मिले...

❁❁❁

आओ, चंदनोत्सव मनाएँ...

सभी की जानकारी हेतु –

इसी वर्ष दिल्ली में 23-24-25 दिसंबर को

'गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव' के अंतर्गत

'योगी परिवार' के ज्योतिर्धरों की निश्रा में **प.पू. गुरुजी का 80वाँ प्रागट्योत्सव मनाएँगे।**

अतः 13 **मार्च** 2017**, सोमवार–धुलेन्डी** के दिन **सुबह 9:00 बजे**

स्थानिक मुक्त **चंदनोत्सव के अंतर्गत**

प.पू. गुरुजी का **चंदन से पूजन** करके **प्रागट्य दिन** हेतु भक्ति अदा करेंगे!

व्रतोत्सवसूची

1. दि.	7.3.'17, मंगलवार	–	**गुरुहरि काकाजी महाराज का स्वधामगमन दिन**
2. दि.	8.3.'17, बुधवार	–	एकादशी, व्रत
3. दि.	12.3.'17, रविवार	–	होली, होलिका दहन, **ब्रह्मस्वरूप भगतजी महाराज की जयंती**
4. दि.	**13.3.'17, सोमवार**	–	धुलेन्डी, **संतभगवंत प.पू. साहेबजी की प्राकट्य तिथि** **प.पू. गुरुजी का 80वाँ प्राकट्य दिन** **चंदनोत्सव – सुबह 9 : 00 बजे से...**
5. दि.	24.3.'17, शुक्रवार	–	एकादशी, व्रत
6. दि.	28.3.'17, मंगलवार	–	चैत्री नूतन वर्षारंभ, 'गुडी पड़वा'-नीम के रस का प्रसाद
7. दि.	5.4.'17, बुधवार	–	रामनौमी, **भगवान श्री स्वामिनारायण जयंती**, व्रत
8. दि.	7.4.'17, शुक्रवार	–	एकादशी, व्रत
9. दि.	9.4.'17, रविवार	–	गुरुवर्य योगीजी महाराज का भागवती दीक्षा दिन
10. दि.	11.4.'17, मंगलवार	–	पूर्णिमा, श्री हनुमान जयंती
11. दि.	23.4.'17, रविवार	–	एकादशी, व्रत
12. दि.	28.4.'17, शुक्रवार	–	अखात्रीज
13. दि.	29.4.'17, शनिवार	–	गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज की अंतर्धान तिथि
14. दि.	4.5.'17, गुरुवार	–	**प्रगट ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामिजी का प्राकट्य दिन**
15. दि.	6.5.'17, शनिवार	–	एकादशी, व्रत
16. दि.	9.5.'17, मंगलवार	–	नृसिंह जयंती, फलारी व्रत
17. दि.	22.5.'17, सोमवार	–	एकादशी, व्रत
18. दि.	23.5.'17, मंगलवार	–	**ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज की जयंती** **प.पू. गुरुजी की भागवती दीक्षा तिथि**

R.N.I. 28971/ 77 ***(Air Mail)***

'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine – Despatched on 15th of alternate months

If undelivered please return to :— *Printer, Publisher, Editor :* **SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI**

'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 4709 1281

Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A-6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052